नव मानववाद - भौतिक मानववाद की आध्यात्मिक परिणति

डॉ0 प्रबुद्ध मिश्र
उपाचार्य, दर्शन शास्त्र विभाग,
नेहरू ग्राम भारती डीम्ड विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद, उ0प्र0

मानवेन्द्रनाथ राय की दृष्टि में **परम्परागत मानववाद** ने मानवीय स्वतंत्रता के जिस सार तत्व को प्रतिष्ठित करना चाहा, उदारवाद ने उसे उजागर किया और दिशा प्रदान की। परन्तु विशाद यह है कि आगे चलकर यह दिशा विभिन्न ध्रुवों में बंट गई। मानववाद का मानव तो दृष्टिगत बना रहा, परन्तु उसी मानव का 'मूलभूत सार' दृष्टि से ओझल हो गया। स्वयं मानव की समग्रता धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक अथवा राज्य की एक सावयवी इकाई के रूप में खण्डित हो गयी। परिणाम यह हुआ कि मूल लक्ष्य से विश्रृंखलित यह विचारधाराएं स्वयं की मान्यताओं के पक्ष और विपक्ष के द्वन्द्व में इस प्रकार उलझ गयीं कि, उस 'मूल–मानव' की रक्षा के प्रयास में किसी–न–किसी प्रकार के **'सामूहिक अहं'** का सपक्ष प्राप्त करके उसको ही प्रतिष्ठित कर लिया। यह तथ्य मानववाद के विकास क्रम के विश्लेषण में परिलक्षित होता है।

वृहत्तर रूप में मानववाद एक विचार है जिसमें मानव को सभी हितों का केन्द्र माना जाता है। मानवं ही सृष्टि की सर्वोत्तम कृति है। संक्षेप में मानववाद मानव के निजी हितों और अपने स्वजनों के हितों की अभिव्यंजना है।[3] इस मूल आधारभूमि पर मानववाद के कई प्रकार के सम्प्रदाय स्थापित हुये। जिन्होंने रूढ़िबद्ध समाज में मानव अस्मिता के स्थापना की बात शुरू कर अपने को स्थापित किया। लेकिन उनकी अपनी एक सीमा थी। मनुष्य मात्र के समग्र उत्थान का प्रस्तावक न बन पाने के कारण एक स्थिर, चिन्तन नहीं बन सके।

आधुनिक मानववादी दर्शन के प्रकारों में **आस्तिक मानववाद** की स्थापना **आगस्ट काम्टे** ने किया। काम्टे परम्परागत मानववाद की अपूर्णता को दूर करने का प्रयास करते हुए आस्तिकता के प्रकृतिवाद के आधार पर धर्म का अन्वेषण किया।[4] उन्होंने ईश्वर की पूजा के स्थान पर मानवता के पूजा पर जोर देते हुए मानवीय धर्म को स्थापित किया। परन्तु यहां आस्तिक मानववाद की त्रुटि यह रही की मानवता की पूजा में मानवता भगवान् बन गयी और मानव भक्त मात्र बनकर रह गया।

प्रकृतिवाद को वैज्ञानिकता की ओर मोड़ते हुए महान चिन्तक **कार्ल मार्क्स** के अनुसार माननवाद को तभी स्थापित किया जा सकता है। जब निजी सम्पत्ति को समाप्त किया जाए और एक वर्ग रहित समाज की स्थापना की जाए। सामाजिक–असमानता और शोषण ही सभी मानवीय समस्याओं की जड़ है। उनके अनुसार क्रान्तिकारी

विद्रोह या संघर्ष के द्वारा ही मानववाद को उसके सही रूप में समाजवाद में स्थापित किया जा सकता है। इसीलिए मार्क्स ने आदर्श समाजवाद का खण्डन करके **प्रायोगिक मानववाद** की अवधारणा वैकल्पिक रूप में प्रस्तुत किया।[5]

राय के अनुसार मार्क्स का विकल्प पूंजीवादी शोषण से त्रस्त मानवता के लिए अत्यन्त आकर्षक है, परन्तु मार्क्स का प्रायोगिक मानववाद एक ओर तो मनुष्य के भौतिक कल्याण तथा सामाजिक सुरक्षा को पूर्ण आश्वासन प्रदान करता है वहीं दूसरी ओर मनुष्य की स्वतंत्रता और नैतिक मूल्यों की अवहेलना कर देता है।

उपयोगितावादी मानववाद का उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में अभ्युदय हुआ। **पियर्स, जेम्स, शिलर** और **ड्यूबी** ने उपयोगिता विचार को आन्दोलन के रूप में विकसित किया।[6] मार्क्सवाद से आगे बढ़ते हुए उपयोगितावाद यह मानता है कि सभी सभ्यताओं में मानव–हित निहित है। सीधे शब्दों में उपयोगितावाद बहुत आकर्षक लगता है लेकिन राय की दृष्टि से उपयोगितावाद निश्चित रूप मानव मूल्य एवं धारणाओं में विश्वास रखता है परन्तु मानव शब्द कोई एकल सत्ता नहीं है, अनन्त मनुष्यों की अनन्त हिताकांक्षाओं में से एक 'मानव–हित' को परिभाशित नहीं किया जा सकता है।

समकालीन मानववादी चिन्तन की मूल भाव भूमि यह रही परन्तु अब परम्परागत मानववाद के 'मानव–हित' के विचार से आगे बढ़ते हुये मनुष्य को **'उच्च–जीवात्मा'** के रूप में प्रस्तुत करने तथा उसकी आन्तरिक शक्तियों को पहचानने का प्रयत्न किया गया। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में यह विचार प्रस्तुत किया गया कि जो लोग व्यक्ति की सृजनात्मकता, प्रेम, उच्च, मूल्य, उत्थान, आत्म–सिद्धि आदि का अध्ययन करते हैं, वे मानववादी विचारक हैं।

समकालीन पाश्चात्य मानववाद चिन्तन में **जॉक मारिता**[7] ने **वीरोचित मानववाद** का प्रतिपादन किया। उनके दृष्टि में मानववाद में मनुष्य की पूजा नहीं की जाती है वरन् मानव जीवन के गौरव और उसके व्यक्तिगत अधिकारों के प्रति आदरभाव रखते हैं। **एब्राह्म मैसलों**[8] के अनुसार व्यक्ति की पांच मूल आवश्यकताएं होती है। दैहिक, सुरक्षा, यूथचारिता, सम्मान और आत्मसिद्धि की आवश्यकता। मैललो[9] के अनुसार इन आवश्यकताओं की पूर्ति से ही मानव प्रसन्न और तनाव मुक्त हो सकता है। **रोजर्स** व्यक्ति की उन्मुक्तता को अधिक महत्व प्रदान करते हैं। रोजर्स[10] की दृष्टि में उसी व्यक्ति का व्यक्तित्व पूर्ण है, जो अपने सभी कार्यों को मुक्त रूप से करता है। **गोल्डस्टाइन**[11] के अनुसार व्यक्ति को सामाजिक संघर्शों से बचने, उसे सुरक्षा और निर्भयता प्रदान करने वाला सिद्धान्त ही मानववादी सिद्धान्त है। **फ्रैंक्ल**[12] का मध्य व्याप्त तनाव को शिथिल करना मानववाद है।

मानवेन्द्रनाथ राय की दृष्टि में समकालीन पाश्चात्य मानववादी विचारधारा वास्तव में मनोचिकित्सा से उत्पन्न हुयी है। जब मनोचिकित्सक मानसिक रोगियों का उपचार करने में अक्षम रहे तब उपरोक्त चिन्तकों के मन में मानव प्रकृति के दूसरे आयाम को जानने की इच्छा उत्पन्न हुयी और उपरोक्त विचारधाराएं विकसित हुईं। ये विचारधाराएं समाज में स्वस्थ व्यक्ति की संख्या में वृद्धि कर सकती हैं लेकिन दर्शन की शास्त्रीय समस्याओं की

मीमांसा न कर पाने के कारण स्वस्थ दर्शन की श्रेणी में नहीं आते हैं।

समकालीन भारतीय माननवादी दार्शनिक सम्प्रदाय में मानववादी दर्शन किसी धर्म विशेष अथवा किसी पुरानी दार्शनिक अवस्था में नहीं पनपा है। इसका उदय मनुष्य तथा उसके सामाजिक अस्तित्व के प्रति व्यापक चिन्तन से हुआ है। इसके उदय में बौद्धिक पुनर्जागरण एक कारणात्मक प्रेरक रहा है। समकालीन भारतीय मानववादी चिन्तन को उनके विषय सामग्री के आधार पर सामान्यतः दो वर्गों में विभाजित कर सकते हैं। प्रथम **आध्यात्मिक मानववाद** और द्वितीय **समाजवादी मानववाद**।

आध्यात्मिक मानववाद में गुरूवर रवीन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गांधी, विवेकानन्द और देवराज के विचारों को रखा जा सकता है। **गुरूवर टैगोर**[13] के अनुसार मनुष्य का वैशिष्ट्य तत्वों पर शासन करना या अपने से शारीरिक दृष्टि से सबल जीवधारियों को वशीभूत करने में नहीं है, बल्कि उसका वैशिष्ट्य एक नए सिद्धान्त स्वतंत्रता के उपभोग करने में अभिव्यक्त होता है। प्रकृति का नियामक सिद्धान्त **नियतत्ववाद** है। **महात्मा गांधी** के विचार है कि इस जगत में सबकुछ परिवर्तित हो रहा है, परन्तु इन समस्त परिवर्तनों के पीछे एक जीवन्त शक्ति है जो कभी परिवर्तित नहीं होती, जो सबको एक साथ मिलाकर रखती है।

विवेकानन्द[14] के विचार में समस्त अशुभ भेद में है, समस्त षुभ समानता में है, जो समस्त वस्तुओं की एकता और तद्रूपता में विद्यमान है। समाज सेवा और वैयक्तिक मुक्ति दो विरोधी मूल्य नहीं है। **लोक–संग्रह** द्वारा भी मुक्ति संभव है, और इस रूप में दोनों एक दूसरे से संबंद्ध मूल्य है। **देवराज**[15] का मानववाद, **सृजनात्मक मानववाद** है। इनके अनुसार दार्शनिक चिन्तन का केन्द्रबिन्दु बिन्दु मनुष्य है, वह विशेष रूप से सृजनशील है और आध्यात्मिक मनोवृत्ति का लोप शक्य नहीं है।

मानवेन्द्रनाथ राय के अनुसार आध्यात्मिक प्रवर्षत्ति की विचारधारा कोई सुव्यवस्थित और संगत विचारधारा नहीं है। उसमें दर्शन के तत्वों का अभाव है। अर्थहीन तथा अर्द्ध सत्य कथनों के माध्यम से वह दृढ़वादी आस्था पर नीति को प्रतिस्थापित करने का प्रयत्न करता है। ये विचारक वस्तुतः धर्म प्रचारक हैं, इनके द्वारा प्रचारित सत्य, अहिंसा, प्रेम आदि शब्दों की कोई परिभाशा नहीं है, वे अमूर्त प्रत्यय हैं। उनका कुछ भी अर्थ निकाला जा सकता है।

समाजवादी विचारधारा में नेहरू और अम्बेडकर जी के विचारों को रख सकते हैं। समाजवादियों ने अपनी मीमांसा में धर्म के आधार को त्याग करके विज्ञान के सिद्धान्तों को अपना आधार बनाया। इससे मानववाद को रूढ़िवादिता से मुक्त होने का अवसर प्राप्त हुआ। नेहरू जी ने वैज्ञानिक मानववाद की धारणा का विकास किया। उनके अनुसार व्यक्ति और समाज के मध्य समन्वयात्मक आधार पर आन्तरिक और वाह्य जीवन का समन्वय किया जाए जिससे मनुष्य निरन्तर कुछ श्रेष्ठ बन सके। डॉ0 अम्बेडकर वैयक्तिक स्वतंत्रता के कट्टर समर्थक थे। उनका मत है कि प्रत्येक व्यक्ति को अभिव्यक्ति, धर्म, पेशा तथा आनन्द प्राप्ति की स्वतंत्रता होनी चाहिए। ऐसा तभी सम्भव हो सकता है जब पीड़ित वर्गों के ऊपर सामाजिक तथा राजनैतिक बन्धनों को हटाकर उन्हें प्रगति के

डॉ0 गया प्रसाद मिश्र
सहायक अध्यापक,
मथुरिया इण्टर कालेज,
डिबाई, बुलन्दशहर

समान अवसर प्रदान किए जाए।

समाजवादी विचारधारा में मानव स्वतंत्रता की बात पर्याप्त स्तर तक सबलता से प्रतिष्ठित हुयी है। लेकिन समाजवादियों की यह धारणा कि व्यवस्था के माध्यम से ऐसा विधान प्रस्तुत होगा कि जिससे मनुष्य को स्वतंत्रता की निश्चिंतिता प्राप्त हो जायेगी। लेकिन सम्भवतः समाजवादी विचारधारा ने इतिहास के उन पन्नों की ओर ध्यान नहीं दिया कि व्यवस्था की स्थापना मनुष्य ने किया और फिर वहीं मनुष्य व्यवस्था का गुलाम हो जाता है।

इस प्रकार हम पाते हैं कि उन्नीसवीं शताब्दी की सामाजिक प्रक्रिया अति संक्रमणशील थी। एक ओर रूढ़िवादियों तथा प्रतिक्रियावादियों का समूह था जिसने सामान्य जन से आग्रह किया कि वे आधुनिक संस्कृति से प्रभावित न हो और उनको प्राचीन परम्पराओं एवं रीति–रिवाजों के अनुकरण के लिए प्रोत्साहित किया ताकि धर्म की संस्कृति तथा सामाजिक निरन्तरता बनी रहे, लेकिन दूसरी तरफ प्रगतिशील लोगों का भी समूह था जिसने लोगों के ध्यान को सामाजिक जड़ता की ओर आकर्षित किया और आधुनिक संस्कृत तथा विज्ञान से उन्नतिशील विचारों को ग्रहण करने पर बल दिया। स्पष्टतः यह सामाजिक गत्यात्मकता के मध्य का ही संघर्ष था जिसने एक सामाजिक चेतना जागृत किया और उस बौद्धिक विचार के उदय में सहायता की जिसके कारण सामाजिक पुनरुद्धार एवं राजनैतिक उत्थान का मार्ग प्रशस्त हो गया और व्यक्ति की समस्याओं की विचारधारा सम्बन्धी व्याख्या के लिए नव–मानववादी विचारधारा प्रोत्साहित हुई।

यह एक विडम्बना ही है कि समकालीन दर्शन के मौलिक विचारकों के सुषुप्तावस्था में होने के बावजूद मानवेन्द्रनाथ राय के चिन्तन की ओर राजनीतिक और अकादमिक जगत ने अपेक्षित ध्यान नहीं दिया। उग्र राष्ट्रवाद से प्रारम्भ होकर साम्यवाद से गुजरती हुयी उनकी चिन्तन–यात्रा का नव मानववाद या वैज्ञानिक मानववाद तक पहुंचाना उन के स्वयं का वैचारिक उत्कर्ष ही नहीं वरन् औपनिवेशिक परतन्त्रता से मुक्ति की आकांक्षा करने वाली स्वातन्त्रय–चेतना का अपने समय में प्रचलित विकल्पों की अपर्याप्यतता का अनुभव करते हुए एक नए विकल्प का प्रस्तावक होना है।

मानवेन्द्रनाथ राय ने साम्यवाद की सफलता के आवरण को स्वच्छ कर उसकी वास्तविक अपर्याप्तता का विश्लेषण करते हुए उसके विफल होने की भविष्यवाणी की थी। राय द्वारा प्रस्तावित विकल्पों की ओर ध्यान न दिए जाने के ही कारण सामान्यतः यह समझ लिया जाता रहा है कि साम्यवाद की असफलता पूंजीवाद की विजय है। परन्तु वास्तविकता यह नहीं है। साम्यवाद के एक सही विकल्प सिद्ध न हो सकने का तात्पर्य पूंजीवादी व्यवस्था की अपरिहार्यता नहीं है। यदि पूंजीवाद में मानवीय सम्वेदना का ह्रास शोषण–दमन–उत्पीड़न और अन्ततः एक हिंस्र मनोवृत्ति में डूबती हुई मानवता को देखा गया है तो यह देखना अब भी गलत नहीं है। इसलिए पूंजीवाद के विकल्प के अन्वेशण की प्रासंगिकता और बढ़ जाती है तथा इस तलाश की प्रक्रिया में मानवेन्द्रनाथ राय के विचार की ओर ध्यानाकर्षण स्वाभावित है।

मानवेन्द्रनाथ राय के अनुसार सभी प्रचलित विचारधाराएं और व्यवस्थाएं मनुष्य की स्वतंत्रता के चरम उद्देश्य को

अपनी प्रक्रिया में विस्मृत ही नहीं कर देती बल्कि कई बार स्वयं उस के विरुद्ध हो जाती है। राय का मन्तव्य है कि आज असली संघर्ष पूंजीवाद और साम्यवाद के बीच हैं, क्योंकि अनौपचारिक संसदीय लोकतंत्र में भी पूंजीवाद व्यवस्था का नैरन्तर्य अब घोषित सिंद्धात के रूप में भी तो कम से कम व्यवहार में उदारवाद के स्थान पर फांसीवाद की मांग करता है। इसीलिए मानवेन्द्रनाथ राय का यह विश्लेषण संगत प्रतीत होता है कि हमारे युग का संघर्ष सर्वसत्तावाद और लोकतंत्र के बीच है। इसीलिए मानवेन्द्रनाथ राय एक ऐसे राजनैतिक तन्त्र का प्रस्ताव करते हैं जिसमें सत्ता के किसी भी रूप का हस्तांतरण और केन्द्रीकरण न हो सके और व्यक्ति अपनी सम्प्रभुता का भोग कर सकें।

समकालीन वैश्विक संकट से उबरने के लिए एक नयी विश्व–व्यवस्था के चिन्तकों को मानववाद और नव–मानववाद की परम्पराओं की ओर उन्मुख होना होगा। इन स्रोतों से ही क्रान्ति के एक नए दर्शन की प्रेरणा ग्रहण की जानी चाहिए। व्यक्तिवाद के मानववादी सिद्धान्त से प्रेरित नव–मानववाद ने एक लौकिक विवेकवाद और विवेकवादी नीतिशास्त्र की सम्भावना स्थापित की थी। नव–मानववाद ने भौतिक विज्ञान के सिद्धान्तों और पद्धतियों को मनुष्य और समाज के अध्ययन पर लागू किया। सौ वर्ष पहले की अपेक्षा आज प्रकृति–जीव और जड़ की जानकारी बहुत अधिक हो जाने के कारण मनुष्य के जीवन और अर्न्तसम्बन्धों की समस्याओं के प्रति मौलिक वैज्ञानिक पद्धति अधिक सफल होने को परिबद्ध है। आज हम इस मान्यता के साथ प्रारम्भ कर सकते हैं कि मानव 'प्राक् इतिहास' जंगल से निकले दीर्घ अवधि व्यतीत हो चुकी है, कि सामाजिक सम्बन्धों में विवेकसम्मत समन्वय लाया जा सकता है और इसीलिए भ्रष्ट और क्षयकारी यथास्थिति को लोकतान्त्रिक स्वतंत्रता की नयी व्यवस्था से प्रतिस्थापित करने के प्रयासों के साथ नैतिक मूल्यों के अनुभव का मेल हो सकता है। एक नैतिक व्यवस्था विवेक सम्मत तरीके से संगठित समाज का ही सुफल है क्योंकि एक समन्वित भौतिक ब्रह्माण्ड की पृष्ठभूमि से उत्पन्न होने के कारण मनुष्य सारतः विवेकशील है और इसीलिए नैतिक है। समन्वित और पारस्परिक लाभकारी सामाजिक सम्बन्धों की विवेकसम्मत इच्छा से ही नैतिकता उत्पन्न होती है।

मानववादी विचारधारा में पाँच प्रकार के मानवीय मूल्यों को स्थापित करने का प्रयास किया गया है। ये पाँचों मूल्य इस प्रकार से हैं– भौतिक मूल्य, बौद्धिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, नैतिक मूल्य तथा आध्यात्मिक मूल्य। इन मूल्यों को आचार मीमांसा में स्वतन्त्रता, समानता, बन्धुत्व तथा न्याय के रूप में स्थापित किया गया है। इन्हें मनुष्य के लिए आवश्यक सद्गुण बताया गया है। इन सद्गुणों के सम्यक् सम्मिलन से मनुष्य को जीवन में आत्म सिद्धि प्राप्त होती है।

मानवेन्द्र नाथ राय के नव मानववाद में भी इन सद्गुणों को अनिवार्य मानवीय मूल्य के रूप में स्वीकार किया गया है। नव मानववादी समाज व्यक्ति को समाज के साथ नाभि नाल बद्ध माना गया है और यह स्थिति तभी सम्भव है जब प्रत्येक स्वतन्त्र व्यक्ति समानता, बन्धुत्व और न्याय से अनिवार्यतः सम्पृक्त हो। लेकिन स्वतन्त्रता के मूल्य को नव मानववाद में प्राथमिक और सर्वोच्य मूल्य माना गया है। क्योंकि स्वतन्त्रता ही समस्त सद्गुणों की आधारशिला है। नव मानववादी विचार भूमि के आधार पर संक्षेप में कह सकते हैं कि स्वतन्त्रता के बिना मनुष्य जीवन उसी प्रकार व्यर्थ है जैसे किसी पंक्षी का जीवन जो समता, बन्धुता, और न्याय के साथ पिंजरे में कैद होकर निरंतर अपनी चैतन्यता खो रहा है।

मनुष्य पृथ्वी पर शून्य से नहीं अवतरित हुआ। जैविक विकास की दीर्घ प्रक्रिया के माध्यम से वह भौतिक विश्व की पृष्ठभूमि से विकसित हुआ है। उसकी नाल कभी कटी नहीं, अपने मस्तिश्क बुद्धि और इच्छा के साथ मनुष्य भौतिक ब्रह्माण्ड का एक अंगभूत हिस्सा बना रहा है।

यह ब्रह्माण्ड एक सुव्यवस्था है। यह एक विधि संचालित व्यवस्था है। इसलिए मनुष्य का सत्व और उसका सम्भवन, उसके भाव, इच्छा, विचार भी निश्चित है, मनुष्य सारतः विवेकशील है। मनुष्य में विवेक ब्रह्माण्ड के समन्वय की प्रतिध्वनि है। नैतिकता को मनुष्य की अन्तर्जात विवेकशीलता के सन्दर्भ में समझा जाना चाहिए। केवल तभी मनुष्य सहजता और स्वेच्छा से नैतिक हो सकता है। विवेक उस नैतिकता के लिए एकमात्र आधार है जो अन्तर्रात्मा का एक निवेदन है और अन्तरात्मा, अपने क्रम में, परिवेश का सहज बाध और उस पर प्रतिक्रिया है। अपने अन्तिम विश्लेषण में अन्तरात्मा किसी भी तरह गुह्य और रहस्यपूर्ण नहीं है। यह एक जैविक क्रिया है, इसलिए चेतना के इस स्तर पर यान्त्रिक मनुष्य के अन्तर्गत विवेकशीलता उस सामंजस्यपूर्ण व्यवस्था की एकमात्र आधारभूमि है जो कि नैतिक व्यवस्था भी है क्योंकि नैतिकता एक विवेकसम्मत क्रिया है। इसलिए सभी सामाजिक प्रयासों का उद्देश्य मनुष्य को अपनी अन्तर्जात विवेकशीलता के प्रति अत्यधिक सचेत करते रहना चाहिए।

समाज को पुनर्संगठित करने के किसी भी प्रयत्न का आरम्भ समाज की इकाई से होना चाहिए। यह भी कह सकते हैं कि उसके मूल से होना चाहिए। मानवीय विरासत के सम्पूर्ण भण्डार के आधार पर क्रान्ति का नया दर्शन विकसित करने और तदनन्तर राजनीतिक कर्मशीलता और आर्थिक पुनर्निमाण के व्यवहार का ऐसा उद्यम नव–मानववाद कहा जा सकता है।

नव–मानववाद राष्ट्र या वर्ग के सीमाओं में विचार नहीं करता। उस का सम्बन्ध केवल मनुष्य से है। स्वतन्त्रता से उसका आशय व्यक्ति की स्वतंत्रता है। इसलिए इसे नव–मानववाद कहा जाता है। नव शब्द का प्रयोग इसलिए किया जा रहा है क्योंकि वह आधुनिक सभ्यता की शताब्दियों में प्राप्त वैज्ञानिक ज्ञान और सामाजिक अनुभव से सम्पन्न पुनर्बलित और सवंर्धित माननवाद है।

नव–मानववाद वैश्विक है। वह उस अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के कल्पना लोक का अनुसरण नहीं करता जिसके लिए स्वायत्त राष्ट्र–राज्यों का अस्तित्व एक पूर्व शर्त है। एक विश्व या एक विश्व–सरकार का आदर्श राष्ट्रराज्यों की निरन्तरता की संगति में नहीं है। एक के लिए दूसरा एक पवित्र इच्छा अथवा इच्छित चिन्तन है। स्वतन्त्र पुरुषों–स्त्रियों का एक वैश्विक सर्वकल्याणमण्डल एक सम्भावना है। यह पूंजीवादी, फांसीवादी, साम्यवादी या किसी अन्य प्रकार के ऐसे राष्ट्र–राज्यों की सीमाओं से अबाधित आध्यात्मिक समुदाय होगा जो वैश्विक मानववाद के प्रभाव में शनैः शनैः लुप्त होता जायेगा। यही मानवता के भविष्य का मौलिक परिदृश्य है।

रॉय के जीवन में स्वतंत्रता प्राप्ति का यह उत्स विचित्र चारित्रिक संगठन एवं बौद्धिक ऊँचाई के साथ पाते हैं। विचार और क्रिया का अद्भुद एकत्व उनके साथ हम पाते है। उन्होंने जैसा सोंचा और समझा, वैसा ही जीवन जिया तथा उस आदर्श को धरती पर अनुदित करने हेतु सम्पूर्ण जीवन को उत्सर्ग कर दिया, भले ही वे कभी भी चैन से न रह पाये हों अपने लड़कपन में वे अराजकतावादी हुए लेकिन जैसे ही उन्हें पता चला कि इस प्रकार की क्रान्तिकारी राष्ट्रवादिता की सीमाएँ एवं त्रुटियॉ है तो वे साम्यवादी हो गये क्योंकि तब उन्होंने साम्यवाद का में मानववाद के लिए बेहतर गुंजाईश पायी। पर जब उन्होनें पाया कि साम्यवाद का आदर्श भी भ्रमात्मक ही है

तो वे साम्यवाद के मूल्यांकन एवं उनकी आलोचना तक ही सीमित नहीं रहे बल्कि उस दिशा में आगे बढ़ते हुए, स्वतंत्रता के दर्शन को अधिक व्यवहार–संगत एवं यथार्थ मूलक बनाते हुए 'नव–मानवतावाद' की प्रतिष्ठा की। ऐसा करने में, अनुभूत बौद्धिक एवं व्यावहारिक सत्य के अनुशीलन में निर्भय एवं ईमानदारी पूर्वक आगे बढ़ते हुए उन्होने सारी बाधाओं एवं कष्टों को पार किया चाहे वह व्यक्तिगत तकलीफ, आलोकप्रियता का दंश अथवा जीवन का खतरा ही क्यो न हो। दलगत राजनीति की त्रुटियॉ संसदीय प्रजातंत्र की अनुपयुक्तता आज भी सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रही है और पुनर्वापसी का अधिकार चर्चा के दायरे में आती रही है। इन सब बातों की वकालत राय ने कोई पचास–साठ वर्ष पूर्व की हैं भला ऐसे मेधावान बौद्धिक एवं वैज्ञानिक अनुभूति से युक्त समर्पित मानव की दृष्टि आर्बद्रष्टा क्यों न हो। राय सचमुच में एक आर्शद्रष्टा है। आर्शदृष्टा से तात्पर्य यहॉ किसी अन्तिम एवं परमदृष्टि से नही है, बल्कि उस दृष्टि से है जो सत्य के प्रति समर्पित है, जो निर्भय है और किसी भी लोभ सत्ता या शक्ति के वशीभूत नहीं है तथा जो अपने स्वरूप में अनुभाविक लौकिक एवं वैज्ञानिक है जिस दृष्टि के विचार का अनुप्रयोग लौकिक समाजिक आर्थिक राजनीतिक सत्य के अनुरूप है तथा जो लोक को एक रास्ता एवं नेतृत्व प्रदान कर सकती है। मानवेन्द्रनाथ रॉय एक व्यक्ति नहीं बल्कि एक संस्था है नव मानववाद कोई एक प्रस्तुत एवं सम्पन्न वैचारिक कृति नहीं बल्कि एक विचार प्रक्रिया एवं अभिवृत्ति है जो आर्शदृष्टि को समाहित करती है। मानवेन्द्रनाथ रॉय के इतर अन्य समकालीन भौतिकवादी चिन्तक अपने चिन्तन में भौतिकवाद और आध्यात्मवाद के द्वैत की समस्या में उलझे रह गये थे। मानवेन्द्रनाथ रॉय के चिन्तन का प्रारम्भ तो भौतिकता से होता है, वे मानते हैं कि यह ही एकमात्र सम्भव विश्व है परन्तु उनके चिन्तन की दिशा आध्यात्मिकता की ओर जाती है। वे कहते हैं कि 'व्यक्ति स्वातन्त्रय' अंतिम मौलिक सत्य है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. राय, एम0 एन0, न्यू ओरियन्टेशन, रेनेसां पब्लिकशन, कलकत्ता, 1996 पृ0 40
2. राय, एम0 एन0, वियॉण्ड कम्युनिज़्म, पृ0 83, कपूर कुमकुम, नवोग्र, मानववाद और मार्क्स, क्लासिक पब्लिकेशन, जयपुर, 1996, पृष्ठ 166 से साभार।
3. Had a Rimarkable high level of orginality and achievements and a deeply held conviction of them inportence of individidual attaiment. Mosse Hedes, Homanism, the Greek Ideal and its survival (London : George Allen & Union, 1960

4. Love of Huminity constitutes the whole duty of man. August Comte, A general Review pestwism (New Yourk Hobert Speller & Sons 1957)

5. The transcendence of privete property is therefore the complete emancipation of all human senss and attributes, But it this emancipation prceisely because these sense and attributes have become subsective and objective human. Karl Marx, Economic and philosophy monuscriplion of 1844.

6. Just as Socratees brought philosophy down from the clouds into the mark place, pragmatism brought from the back from the acadamy. Into the loboratory, and facotry. Abrahm Kaplan, The New world Philosophy (London colins, 1965)

7- There is nothing man desire more than a heroic life, There is nothing less common to man than heroism. Jock maritaan Introduction, True Humanism P. XII.

8. मैसलो अब्राह्म, पर्सन और साइन्स? साइकोलॉजिस्ट, आमेर, 1955

9. मैसलो, ए0 एच0, मोटीवशन एण्ड पर्सनाल्टी, न्यूयार्क वाइली, 1957

10. रॉजर्स सी0 आर0, ऑन वीइग ए पर्सन, वोस्टन हाफ्टन, मिफिन, 1961

11. गोल्डस्टाइन, के. ह्यूमन नेचर, हावर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1940

12. फ्रैंक्ल, बी0 ई0, द डॉक्टर ऑफ द सोल, बैनरम बुक्स, न्यूयार्क, 1969

13. टैगोर, रवीन्द्रनाथ, द रिलीजन ऑफ मैन, विश्व भारती प्रकाशन, कलकत्ता, पृ0 5

14. विवेकानन्द, कल्चर एण्ड साशलिज़्म, अद्वैत आश्रम, मायावती अल्मोड़ा, हिमालय, 1970, पृ0 प्रस्तावना

15. देवराज एन0 के0, संस्कृति का दार्शनिक विवेचन, इंडज पब्लिकेशन दिल्ली, 1963 पृ0 11

डॉ0 प्रबुद्ध मिश्र

पत्र व्यवहार – 603–ए, न्यू सोहबतियाबाग,

इलाहाबाद, 211006, उ0प्र0

मोबाइल : 09415646402

E-mail : shriprabhu@gmail.com